श्रीमद् राजचंद्र
वचनामृत - 493

“छः पद का पत्र”

Shrimad
Rajchandra
Mission
Delhi

Reference for Paryushan Parv 2021

अनन्य शरण के दाता ऐसे श्री सद्गुरूदेव को अत्यंत भक्ति से नमस्कार

*****

तत्त्व-निर्णय - षट् दर्शन का सार

जो शुद्ध आत्मस्वरूप को प्राप्त हुए हैं, ऐसे ज्ञानी पुरुषों ने नीचे कहे हुए छः पदों को सम्यक् दर्शन के निवास के सर्वोत्कृष्ट स्थानक कहे हैं -

प्रथम पद - 'आत्मा है।' जैसे घट पटादि पदार्थ हैं, वैसे आत्मा भी है। अमुक (कुछ) गुण होने के कारण जैसे घट पटादि के होने का प्रमाण है, वैसे स्व-पर प्रकाशक चैतन्य सत्ता का प्रत्यक्ष गुण जिसमें है, ऐसा आत्मा के होने का प्रमाण है।

दूसरा पद - 'आत्मा नित्य है।' घट पटादि पदार्थ अमुक (कुछ) कालवर्ती है। आत्मा त्रिकालवर्ती है। घट पटादि संयोगजन्य पदार्थ हैं। आत्मा स्वाभाविक पदार्थ है, क्योंकि उसकी उत्पत्ति के लिए कोई भी संयोग अनुभव योग्य नहीं होते। किसी भी संयोगी द्रव्य से चेतन सत्ता प्रकट होने योग्य नहीं है, इसलिए अनुत्पन्न है। असंयोगी होने से अविनाशी है, क्योंकि जिसकी उत्पत्ति किसी संयोग से नहीं होती, उसका किसी में लय भी नहीं होता।

तीसरा पद - 'आत्मा कर्त्ता है।' सर्व पदार्थ अर्थ क्रिया संपन्न है। किसी न किसी परिणाम-क्रिया सहित ही सर्व पदार्थ देखने में आते हैं। आत्मा भी क्रिया संपन्न है। क्रिया संपन्न है, इसलिए कर्त्ता है। श्री जिन ने उस कर्तुत्व का त्रिविध विवेचन किया है - परमार्थ से स्वभाव परिणति द्वारा

आत्मा निज स्वरूप का कर्त्ता है। अनुपचरित (अनुभव में आने योग्य, विशेष संबंध सहित) व्यवहार से यह आत्मा द्रव्य कर्म का कर्त्ता है। उपचार से घर, नगर आदि का कर्त्ता है।

चौथा पद - 'आत्मा भोक्ता है।' जो-जो कुछ क्रियाएँ हैं वे सब सफल हैं, निरर्थक नहीं। जो कुछ भी किया जाता है उसका फल भोगने में आता है, ऐसा प्रत्यक्ष अनुभव है। जैसे विष खाने से विष का फल, मिश्री खाने से मिश्री का फल, अग्नि स्पर्श से अग्नि स्पर्श का फल, हिम का स्पर्श करने से हिम-स्पर्श का फल हुए बिना नहीं रहता, वैसे कषाय आदि अथवा अकषाय आदि जिस किसी भी परिणाम से आत्मा प्रवृत्ति करता है उसका फल भी होने योग्य ही है, और वह होता है। उस क्रिया का कर्त्ता होने से आत्मा भोक्ता है।

पाँचवाँ पद - 'मोक्ष पद है।' जिस अनुपचरित व्यवहार से जीव के कर्म के कर्तुत्व का निरूपण किया, कर्तुत्व होने से भोक्तृत्व का निरूपण किया, उस कर्म की निवृत्ति भी है; क्योंकि प्रत्यक्ष कषाय आदि की तीव्रता हो, परंतु उसके अनभ्यास से, उसके अपरिचय से, उसका उपशम करने से उसकी मंदता दिखायी देती है, वह क्षीण होने योग्य दिखता है, क्षीण हो सकता है। वह बंध भाव क्षीण हो सकने योग्य होने से, उससे रहित जो शुद्ध आत्म-स्वभाव है वही मोक्ष पद है।

छठा पद - 'उस मोक्ष का उपाय है।' यदि कभी ऐसा ही हो कि कर्म बंध मात्र हुआ करे तो उसकी निवृत्ति किसी काल में संभव नहीं है, परंतु कर्म-बंध से विपरीत स्वभाव वाले ज्ञान, दर्शन, समाधि, वैराग्य, भक्ति आदि साधन प्रत्यक्ष हैं, जिन साधनों के बल से कर्म बंध शिथिल होता है, उपशांत होता है, क्षीण होता है। इसलिए वे ज्ञान, दर्शन, संयम आदि मोक्ष पद के उपाय हैं।

*****

षट् पद - विस्तार का सार है

छः पद की प्रमाणिकता

श्री ज्ञानी पुरुषों द्वारा सम्यक् दर्शन के मुख्य निवासभूत कहे हुए इन छः पदों को यहाँ संक्षेप में बताया है। समीप मुक्तिगामी जीवों को सहज विचार में यह सप्रमाण होने योग्य हैं, परम निश्चय रूप प्रतीत होने योग्य हैं, उसका सर्व विभाग से विस्तार हो कर उसके आत्मा में विवेक होने योग्य है। यह छः पद अत्यंत संदेह रहित है, ऐसा परम पुरुष ने निरूपण किया है।...

छः पद का प्रयोजन

...इन छः पदों का विवेक जीव को स्व-स्वरूप समझने के लिए कहा है। अनादि स्वप्न दशा के कारण उत्पन्न हुए जीव के अहं भाव, ममत्व भाव के निवृत्त होने के लिए ज्ञानी पुरुषों ने इन छः पदों की देशना प्रकाशित की है। उस स्वप्न दशा से रहित मात्र अपना स्वरूप है, ऐसा यदि जीव परिणाम करे, तो वह सहज मात्र में जागृत हो कर सम्यक् दर्शन को प्राप्त होता है; सम्यक् दर्शन को प्राप्त हो कर स्व-स्वभाव रूप मोक्ष को प्राप्त होता है।...

छः पद का परिणाम

...किसी विनाशी, अशुद्ध और अन्य ऐसे भाव में उसे हर्ष, शोक, संयोग उत्पन्न नहीं होता। इस विचार से स्व-स्वभाव रूप में ही शुद्धता, संपूर्णता, अविनाशता, अत्यंत आनंदता, अंतर रहित उसके अनुभव में आते हैं। सर्व विभाव पर्याय में मात्र स्वयं को अध्यास से एकता हुई है, उससे केवल अपनी भिन्नता ही है, ऐसा स्पष्ट - प्रत्यक्ष - अत्यंत प्रत्यक्ष -

अपरोक्ष उसे अनुभव होता है। विनाशी अथवा अन्य पदार्थ के संयोग में उसे इष्ट-अनिष्टता प्राप्त नहीं होती। जन्म, जरा, मरण, रोगादि बाधा रहित संपूर्ण माहात्म्य का स्थान, ऐसा निज स्वरूप जान कर, वेदन कर वो कृतार्थ होता है।...

छः पद का माहात्म्य

...जिन-जिन पुरुषों को इन छः पदों से सप्रमाण ऐसे परम पुरुषों के वचन से आत्मा का निश्चय हुआ है, वे सब पुरुष स्व-स्वरूप को प्राप्त हुए हैं, आधि, व्याधि, उपाधि और सर्वसंग से रहित हुए हैं, होते हैं, और भविष्य काल में भी वैसे ही होंगे।

*****

भक्ति-निष्ठा और चार नमस्कार

प्रथम नमस्कार - उपदेश देने वाले सद्गुरू को

जिन सत्पुरुषों ने जन्म, जरा और मरण का नाश करने वाला, स्व-स्वरूप में सहज अवस्थान होने का उपदेश दिया हैं, उन सत्पुरुषों को अत्यंत भक्ति से नमस्कार है। उनकी निष्कारण करुणा की नित्य प्रति निरंतर स्तुति करने से भी आत्म-स्वभाव प्रकट होता है। ऐसे सर्व सत्पुरुषों के चरणाविंद सदा ही हृदय में स्थापित रहे।

दूसरा नमस्कार - सद्गुरू की निष्कारण करुणाशीलता को

जिसके वचन अंगीकार करने पर छः पदों से सिद्ध ऐसा आत्म-स्वरूप सहज में प्रकट होता है, जिस आत्म- स्वरूप के प्रकट होने से सर्व काल जीव सम्पूर्ण आनंद को प्राप्त हो कर निर्भय हो जाता है, उन वचनों के कहने वाले सत्पुरुषों के गुणों की व्याख्या करने की शक्ति नहीं है;

क्योंकि जिसका प्रत्युपकार नहीं हो सकता, ऐसा परमात्मभाव मानो कुछ भी इच्छा किए बिना मात्र निष्कारण करुणाशीलता से दिया; ऐसा होने पर भी जिसने दूसरे जीवों को यह मेरा शिष्य है, अथवा मेरी भक्ति करने वाला है, इसलिए मेरा है, इस प्रकार कभी नहीं देखा, ऐसे सत्पुरुषों को अत्यंत भक्ति से वारम्वार नमस्कार हो।

तीसरा नमस्कार - सद्गुरू के प्रति जागृत भक्ति को नमस्कार
सत्पुरुषों ने सद्गुरू की जिस भक्ति का निरूपण किया है, वह भक्ति मात्र शिष्य के कल्याण के लिए कही है। जिस भक्ति को प्राप्त होने से सद्गुरू के आत्मा की चेष्टा में वृत्ति रहे, अपूर्व गुण दृष्टिगोचर हो कर, अन्य स्वच्छंद मिटे, और सहज में आत्मबोध हो, ऐसा जान कर जिस भक्ति का निरूपण किया है, उस भक्ति को और उन सत्पुरुषों को पुनः पुनः त्रिकाल नमस्कार हो।

चौथा नमस्कार - सद्गुरू के केवल-पर्यंत उपकार को नमस्कार
यद्यपि वर्तमान काल में प्रकट रूप से केवलज्ञानी की उत्पत्ति नहीं हुई, परंतु जिसके वचन के विचार योग से शक्ति रूप से केवलज्ञान है यह स्पष्ट जाना है, श्रद्धा रूप से केवलज्ञान हुआ है, विचारदशा से केवलज्ञान हुआ है, इच्छादशा से केवलज्ञान हुआ है, मुख्य नय के हेतु से केवलज्ञान रहता है, जिसके योग से जीव सर्व अव्याबाध सुख के प्रकट करने वाले उस केवलज्ञान को सहज मात्र में प्राप्त करने योग्य हुआ, उस सत्पुरुष के उपकार को सर्वोत्कृष्ट भक्ति से नमस्कार हो! नमस्कार हो!!